

मूंग की ग्रीष्मकालीन खेती

सुमन धायल* और पिकी यादव*



॥ मूंग एक पौष्टिक अनाज फली है, जो पूरे भारत में आहार आधारित अनाज का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। मूंग में लगभग 23-24 प्रतिशत प्रोटीन, 1.0-1.5 प्रतिशत वसा, 3.5-4.5 प्रतिशत फाइबर और 62-65 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट होता है। अमीनो अम्ल विश्लेषण इंगित करता है कि सल्फरयुक्त अमीनो अम्ल मेथियोनीन और सिस्टीन की सांद्रता मूंग में कम और लाइसिन का मान तुलनात्मक रूप से अधिक होता है। यह ज्यादातर दाल, करी, सूप, मिठाई और स्नैक्स में सेवन किया जाता है। अंकुरित बीजों में शतावरी के बराबर पोषण मूल्य होते हैं। ॥

मूंग आमतौर पर गर्म मौसम की फसल है। गर्मियों में बुआई से लेकर परिपक्वता (किस्म के आधार पर) तक 60-65 दिनों की आवश्यकता होती है। इष्टतम वृद्धि के लिए तापमान 27 डिग्री सेल्सियस और 35 डिग्री सेल्सियस के बीच होना चाहिए। यह फसल अधिक तापमान सहन कर सकती है। इस प्रकार गर्मियों के दौरान सफलतापूर्वक उगायी जा सकती है। इसे गर्मी और सूखा सहनीय माना जाता है। मूंग के लिए दिन की लंबाई उत्तरदायी है। छोटे दिनों में जल्दी फूल आने लगते हैं, जबकि लंबे दिनों के परिणामस्वरूप देर से फूल आते हैं। अलग-अलग मूंग की किस्में उनके प्रकाशकाल में भिन्न होती हैं।

मृदा

मूंग की फसल उपजाऊ और बलुई दोमट मृदा में सबसे अच्छी होती है। अच्छी आंतरिक जल निकासी और पी-एच 6.3 और 7.2 होता

*विद्या वाचस्पति, सस्य विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर-313001 (राजस्थान)

बीज टीकाकरण

मृदा और बीजजनित रोगों की रोकथाम और बेहतर उपज के लिए बीजों को एंटीफंगल बायोएजेंट, राइजोबियम और फॉस्फोरस घुलनशील से उपचारित करना चाहिए। मृदाजनित रोगों की रोकथाम के लिए बीज को 5-10 ग्राम ट्राइकोडर्मा 2.5 ग्राम के साथ थीरम या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम/कि.ग्रा. से उपचारित करना चाहिए। बीज ड्रेसिंग के बाद, बीज को राइजोबियम के साथ मिश्रित किया जाना चाहिए। राइजोबियम कल्चर का एक पैकेट (250 ग्राम) 10 कि.ग्रा. बीज के लिए पर्याप्त है। राइजोबियम उपचार नोड्यूल के गठन को बढ़ाता है, जिससे 10-15 प्रतिशत उपज में वृद्धि और बाद की फसल के लिए नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक के उपयोग को भी कम करता है। उपचारित बीज को बुआई से पहले 2-3 घंटे छाया में सुखाना चाहिए।

है। इसकी सर्वोत्तम वृद्धि के लिए अल्प अम्लीय मृदा की आवश्यकता होती है। यह लवणता को सहन नहीं करती है। अधिक क्षारीय मृदा में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से गंभीर आयरन क्लोरोसिस लक्षण उत्पन्न होते हैं। भारी मृदा पर जड़ वृद्धि को प्रतिबंधित किया जा सकता है।

खेत की तैयारी

फसल का अंकुरण और स्थापना के लिए उचित तरह से तैयार बीज क्यारी की आवश्यकता होती है। इसके लिए 2-3 जुताइयों के बाद प्लॉकिंग की आवश्यकता होती है। बीज की क्यारी को झुरमुट और खरपतवार से मुक्त करने के लिए जुताई से पहले बुआई पूर्व सिंचाई होनी चाहिए

किस्में

किस्म का चयन फसल प्रणाली, बुआई का समय और खेती के क्षेत्र में सिंचाई स्रोत पर निर्भर करता है। आईपीएम 02-3, एमएच 421, जीएम 4, सम्राट, मेहा, एस.एम.एल 668 ग्रीष्म ऋतु के लिए उचित किस्में हैं। ग्रीष्म ऋतु के लिए 60-65 दिनों में पकने वाली

किस्में उचित हैं। इन किस्मों में अच्छी प्रारंभिक शक्ति और वृद्धि होनी चाहिए। पहले 25-35 दिनों में बहुत अधिक, ताकि वे फूल आने से पहले अच्छी तरह से स्थापित हो जाएं।

बुआई का समय

गर्मी की फसल के लिए मूंग की बुआई पिछली फसल की कटाई के तुरंत बाद (गेहूं, सरसों, कपास आदि) करनी चाहिए। गर्मियों की फसल की बुआई के लिए मार्च का पहला पखवाड़ा सबसे उपयुक्त है, जबकि 10 अप्रैल के बाद बुआई से बचना चाहिए।

फसल ज्यामिति

बीजों को पंक्तियों में अच्छी नमी, के साथ तैयार बीज क्यारी में 4-5 सें.मी. गहरा बोना चाहिए। फसल 20 से 25 सें.मी. की पंक्ति के फासले पर बोनी चाहिए। मेड़ों पर बोई गई मूंग 15 सें.मी. की दूरी पर बोनी चाहिए।

बीज दर

गर्मियों के लिए 20-30 कि.ग्रा./हैक्टर की सिफारिश की जाती है। बड़ी बीज वाली किस्म के लिए, थोड़ी अधिक बीज दर की अनुशंसा की जाती है।

कटाई, श्रेिशिंग और भंडारण

ग्रीष्मकालीन मूंग को पकने में 60 से 65 दिनों का समय लगता है। फली की परिपक्वता आमतौर पर एक समान नहीं होती है। जब दो तिहाई फली पक जाती है या काली पड़ने लगती है, तब कटाई शुरू कर देनी चाहिए। कटाई हाथों द्वारा या मशीनों द्वारा की जाती है (कम्बाइन हार्वेस्टर)। जब कटाई हाथों द्वारा की जाती है, तो मूंग के डंठल को हाथों से काटा जा सकता है या उखाड़ देना चाहिए। वैकल्पिक रूप से, परिपक्व फली को आसानी से चुना जा सकता है। यांत्रिक कटाई के लिए पौधों में पतझड़ करना चाहिए और कटाई से पहले सुखाना चाहिए। कटाई से पहले पौधों को सुखाने के लिए क्पुनंज या ग्लाइफोसेट का उपयोग किया जा सकता है। कटाई के दौरान बीजों के विभाजन और क्षति को इष्टतम बीज नमी सामग्री (14 से 16 प्रतिशत) पर फसल की कटाई करके कम किया जाए। दोपहर के दौरान, जब तापमान बहुत अधिक होता है और हार्वेस्टर सेटिंग्स द्वारा कटाई से बचना उचित होता है।



मूंग की उन्नत किस्म की फसल

उर्वरक

नाइट्रोजन उर्वरक की आमतौर पर उच्च स्तर पर आवश्यकता नहीं होती है। मूंग में अन्य फलियों फॉस्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम और सल्फर की जरूरत पूरी की जानी चाहिए। मृदा में इन तत्वों की कमी होने पर उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। गर्मियों में उगाई जाने वाली मूंग के लिए 10 कि.ग्रा. नाइट्रोजन और 35 कि.ग्रा. फॉस्फोरस बुआई के समय लगाया जाता है। जिप्सम का प्रयोग 200 कि.ग्रा./हैक्टर कैल्शियम और सल्फर की उपलब्धता सुनिश्चित करेगा। सामान्य रूप से 70 कि.ग्रा. डीएपी/हैक्टर के लिए पर्याप्त है।

सिंचाई

गर्मियों में मूंग की खेती केवल सुनिश्चित सिंचाई के तहत की जाती है। अपने छोटे जीवनचक्र के कारण, इसमें अन्य फसलों की तुलना में कम पानी की आवश्यकता होती है। मूंग जल-जमाव के प्रति संवेदनशील है। सबसे नाजुक सिंचाई का समय फूल आने और फली भरने के दौरान होता है। सिंचाई का प्रबंधन जरूरी है, ताकि पर्याप्त नमी प्रदान की जा सके। आमतौर पर जलवायु परिस्थितियों और मृदा की जल धारण क्षमता के आधार पर 3-4 सिंचाइयां गर्मियों की फसल के लिए पर्याप्त हैं। पहली सिंचाई बुआई के 20-25 दिनों के बाद ही करनी चाहिए और 10 दिनों के बाद इसे दोहराया जाता है। अंतिम सिंचाई बुआई के लगभग 50-55 दिनों के बाद करनी चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन

मूंग में खरपतवार नियंत्रण जरूरी है, ताकि मूंग और खरपतवार के बीच प्रतिस्पर्धा विशेष रूप से प्रारंभिक विकास अवस्था में

कम हो। फसल-खरपतवार प्रतियोगिता 20-25 दिनों बुआई के बाद की महत्वपूर्ण अवधि से भिन्न होती है। बुआई के बाद लगभग 20-25 दिनों में हाथ से निराई करना लाभदायक है। खरपतवारनाशी जैसे पेंडीमेथालिन 30 ई.सी. 3.75 मि.ली./लीटर का इस्तेमाल बीज अंकुरण से पहली फुहार पर करना चाहिए।

रोग प्रबंधन

मूंग कई तरह के रोगों से ग्रसित हो सकती है। मूंग पीला मोजैक वायरस, जड़ सड़न, राइजोक्टोनिया तुषार, आदि गर्मियों की फसल को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। प्रबंधन के लिए प्रतिरोधी किस्में उगाएं और आगे रोगों के प्रसार को रोकने के लिए रोगग्रसित पौधों को नष्ट कर देना चाहिए। ट्रायजोफोस 40 ई.सी. या मैलाथियॉन 50 ई.सी. 2.0 मि.ली./लीटर या ऑक्सीडेमेटोन मिथाइल 25 ई.सी. 2.0 मि.ली./लीटर या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. 1.0 ग्राम/लीटर का 10-15 दिनों के अंतराल में फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

कीट प्रबंधन

मूंग की फसल कई तरह के कीट थ्रिप्स, तम्बाकू, फलीछेदक, सफेद मक्खी से ग्रसित होती है। प्रबंधन के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 3 मि.ली./कि.ग्रा. से बीज उपचार करें। इमिडाक्लोप्रिड के 2 छिड़काव 17.8 एस.एल. 0.2 मि.ली./लीटर 15 दिनों के अंतराल पर करें। एसीफेट 75 एसपी 1.0 ग्राम/लीटर और नीम के तेल का छिड़काव करें।

पैदावार

गर्मी के मौसम में लगभग 1100-1300 कि.ग्रा./हैक्टर पैदावार होती है